

संयम में रमण करने वाले का जीवन देवलोक समान

— आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूँ 7 मई।

अणुव्रत अनुशास्ता राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने 30 अप्रैल को दीक्षा ग्रहण करने वाली तीन साध्वियों की बड़ी दीक्षा कार्यक्रम में संबोध प्रदान कराते हुए कहा कि जो संयम के रमण करता है उसका जीवन देवलोक के समान आनन्द दायी होता है। जिसकी संयम की चेतना जागृत नहीं होती है उसका साधु जीवन नरक बन जाता है। उन्होंने भगवान महावीर की वाणी का उल्लेख करते हुए नव दीक्षित साध्वियों को मुनि जीवन की सारी गति विधियों में संयम को प्रमुखता देने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने नवदीक्षित साध्वियों को विकास का आशीर्वाद प्रदान कराते हुए कहा कि जैन मुनि दीक्षा ग्रहण करने वालो का पहला संस्करण सामायिक चरित्र और दूसरा छेदोपस्थापनीय चरित्र है। जिसे बड़ी दीक्षा के रूप में स्वीकार कराया जाता है। उन्होंने इस मौके पर अपने प्रवचन में कहा कि गुरु शिष्य का संबध तभी गरिमापूर्ण बन सकता है जब शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण होता है ओर गुरु का शिष्य को वात्सल्य मिलता रहता है। उन्होंने कहा कि कठोरता एक सीमा तक सहन हो सकती है पर जब अति हो जाती है तो वह असह्य हो जाती है।

उन्होंने कहा कि अपना विवेक सबसे बड़ा गुरु है। विवेक होने पर ही हम अपने जीवन गुरु बनाते है। विवेक के बिना गुरु के आदेश को नहीं माना जा सकता। इसलिये जीवन में विवेक होना जरूरी है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने नव दीक्षित साध्वियों द्वारा समणी जीवन में किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए आगामी संयम जीवन हेतु मंगलकामना की।

“अध्यात्म का प्रथम सोपान योग” लोकार्पित

नव दीक्षित साध्वी उज्ज्वलयशा ने अपनी बड़ी दीक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए पूर्व समणी जीवन की भांति साध्वी जीवन में भी आगम अनुसंधान का कार्य करते रहने का आशीर्वाद मांगा। इस मौके पर साध्वी उज्ज्वल यशा ने अपने द्वारा पी.एच.डी. हेतु शोध किये गये ग्रंथ “अध्यात्म का प्रथम सोपान योग” को विमोचन हेतु आचार्यश्री महाप्रज्ञ के कर-कमलो में समर्पित किया। नव दीक्षित साध्वी मुकुलयशा एवं साध्वी विशालयशा ने “गुरु शरण है गति प्रतिष्ठा” गीत की प्रस्तुती दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।